بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

DeenSahih Lecture Summary

किताब अत-तौहीद के चुनिंदा अध्याय।

व्याख्यान 7 – रिया (दिखावा) [अध्याय 35]

शनिवार, 14 दिसंबर 2024

वक्ता: शैख़ ह़सन सोमाली (अल्लाह उन्हें मह़फूज़ फूज़ रखे)

शैख़ुल इस्लाम मुह़म्मद इब्न अब्दुल वह्हाब (अल्लाह उन पर रह़म करे) की किताब 'किताब अत-तौह़ीद' से लिया गया।

1. अध्याय को किताब में शामिल करने का कारण— रिया (दिखावा) पर इस अध्याय को किताब अत-तौह़ीद में शामिल करने का कारण यह है कि अर-रिया तौह़ीद को नुकसान पहुँचाता और कमज़ोर करता है, और उस अ़मल को अमान्य कर देता है जिसमें यह पाया जाता है। इसलिए लेखक के लिए इस अध्याय को शामिल करना उचित था, जो शैख़ मुह़म्मद इब्न अब्दुल वह्हाब (अल्लाह उन पर रह़म करे) की समझ और सूझबूझ को दर्शाता है।

2. सूरह अल-कहफ़, आयत 110— लेखक इस आयत का उल्लेख करते हैं:

> "जो अपने पालनहार से मिलने की आशा रखता हो, उसे चाहिए कि सदाचार करे और साझी न बनाये अपने पालनहार की इबादत (वंदना) में किसी को।"

इस आयत में सभी प्रकार के शिर्क से अ़मल को शुद्ध करने का आदेश है, और अर-रिया शिर्क का ही एक रूप है।

3. दीन की बुनियाद - इसी आयत से समझा जाता है कि दीन की बुनियाद यह है कि सभी प्रकार की इबादत में केवल अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल को ही एकमात्र माना जाए, और

यह कि मुशरिकों द्वारा किया जाने वाला शिर्क इबादत में अल्लाह के साथ दूसरों को साझी बनाना है।

4. अल्लाह के सिवा किसी की इबादत जायज़ (स्वीकृत) नहीं - अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल के साथ किसी भी चीज़ की इबादत करना जायज़ नहीं है — चाहे वह मूर्तियाँ हों, नबी हों, नेक लोग हों, या कुछ और।

5. हदीस-ए-क़ुदसी: साझीदारों से बेनियाज़ - अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआ़ला ने फ़रमाया: "मैं साझीदारों से बेनियाज़ हूँ। जो कोई भी अमल करे जिसमें वह मेरे साथ किसी और को साझी बनाए, तो मैं उसे और उसके शिर्क को छोड़ दूँगा" (सहीह़ मुस्लिम)। यह हदीस साबित करती है कि अल्लाह उस अ़मल को स्वीकार नहीं करेगा जो अर-रिया या शिर्क के किसी अन्य प्रकार से दूषित हो। अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआ़ला केवल वही अ़मल स्वीकार करते हैं जो इख़्लास़ के साथ और नबी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार किया गया हो।

6. शिर्क अ़मल की स्वीकृति में बाधा— शैख़ स़ालेह अल-फ़ौज़ान (अल्लाह उन्हें मह़फ़ूज़ रखे) बताते हैं कि यह हदीस शिर्क के सभी रूपों के विरुद्ध चेतावनी देती है। शिर्क अ़मल को स्वीकार्य होने से रोकता है, क्योंकि अल्लाह केवल वही अ़मल स्वीकार करते हैं जो केवल उन्हीं के लिए किया गया हो।

7. इख़्लास़ की अनिवार्यता - इसी तरह, यह हदीस शिर्क की सभी अशुद्धियों से पाक होकर, अल्लाह के लिए ख़ालिस़ निष्ठा के साथ अमल करने की अनिवार्यता को भी दर्शाती है।

8. दलीलों को याद रखने की सलाह— शैख़ ह़सन सोमाली (अल्लाह उन्हें मह़फ़ूज़ रखे) भाइयों और बहनों को इन दलीलों को याद करने की सलाह देते हैं, क्योंकि इन्हें

सही तरीक़े से याद करना और समझना जीवन में लागू करने के लिए एक लाभदायक ज्ञान है।

9. छिपा हुआ शिर्क: दज्जाल से भी ज़्यादा डरावना— लेखक अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु से एक हदीस लाते हैं, कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें उस चीज़ के बारे में न बताऊँ जिससे मुझे तुम्हारे लिए दज्जाल से भी ज़्यादा डर है?" उन्होंने कहा, "हाँ ज़रूर, ऐ अल्लाह के रसूल!" तो उन्होंने फ़रमाया: "वह छिपा हुआ शिर्क है, जैसे कोई व्यक्ति खड़ा होकर नमाज़ पढ़े, और अपनी नमाज़ को इसलिए सुंदर बनाए ताकि कोई दूसरा व्यक्ति उसे देख ले।" शैख़ ﷺालेह अल-फ़ौज़ान (अल्लाह उन्हें महफूज़ रखे) बताते हैं कि इस हदीस और इस अध्याय के बीच संबंध यह है कि इसमें अर-रिया की व्याख्या और उसके विरुद्ध चेतावनी है — कि कोई व्यक्ति लोगों की तारीफ़ की चाहत में, उनके देखने की वजह से इबादत के किसी कार्य को सुंदर बनाए।

10. नबी की करुणा— इस हदीस में हमें नबी ﷺल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अपनी उम्मत के प्रति करुणा का एक उदाहरण मिलता है, कि किस तरह उन्होंने निष्ठापूर्वक उन्हें नसीहत दी।

11. दज्जाल के फ़ितने (उपद्रव) से भी बढ़कर— इस हदीस से यह भी समझा जाता है कि अर-रिया नेक लोगों के लिए दज्जाल के फ़ितने से भी ज़्यादा डरावना है। इसलिए दिखावे और सामान्य रूप से सभी प्रकार के शिर्क से सावधान और सचेत रहना ज़रूरी है।

12. इबादत में प्रसिद्धि से बचना— यह अध्याय कुल मिलाकर हमारी इबादत में दिखावे के ख़तरे को उजागर करता है। हमनें जो सीखा है उसे लागू करना चाहिए और अपनी नमाज़, दुआ, हज या उमराह अदा करते हुए, या कोई भी इबादत का कार्य करते

हुए, फ़िल्माने और फिर उसे इंटरनेट पर डालकर लोगों की तारीफ़ या शोहरत की चाहत रखने से बचना चाहिए।

13. नियत को पाक रखना— नबी ﷺ ने हमारे लिए अर-रिया का डर रखा। इसलिए हर व्यक्ति को अपनी नियत को पाक रखना चाहिए और लोगों की तारीफ़ और ध्यान पाने की चाहत से लड़ना चाहिए, क्योंकि इंसानों की तारीफ़ के लिए इबादत करना अल्लाह की सज़ा का हक़दार बनाता है, और ऐसे कार्य अमान्य, बेकार और अस्वीकार्य कर दिए जाएँगे।

14. "अहदन" शब्द की व्याख्या - नेकी वे कार्य हैं जो निष्ठा के साथ, केवल अल्लाह की रज़ा की तलाश में, और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार किए जाते हैं। आयत के भाग "...और अपने रब की इबादत में किसी को साझी न बनाए" पर ज़ोर देते हुए, शैख़ स़ालेह अल-फ़ौज़ान (अल्लाह उन्हें मह़फ़ूज़ रखे) बताते हैं कि आयत में "अहदन" शब्द निषेध के संदर्भ में एक अनिश्चित शब्द है। इसलिए यह सामान्य है और इसका मतलब है कि अपने रब की इबादत में किसी को भी, किसी भी चीज़ को साझी न बनाना।

15. शिर्क से बचने की दुआ— नबी ﷺ ने हमें शिर्क के डर से बचने के लिए एक दुआ सिखाई:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُشْرِكَ بِكَ وَأَنَا أَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ

(ऐ अल्लाह! मैं तेरे साथ जानबूझकर शिर्क करने से तेरी पनाह माँगता हूँ, और जो मैं नहीं जानता उसके लिए तुझसे माफ़ी माँगता हूँ।)

16. समापन दुआ— वक्ता शैख़ ह़सन सोमाली (अल्लाह उन्हें मह़फ़ूज़ रखे) इस दुआ के साथ व्याख्यान समाप्त करते हैं कि अल्लाह सुब्ह़ानहु व तआ़ला हमारी नियतों को

पाक करे, और हम सबको शिर्क से बचाए — बड़े और छोटे, ज़ाहिर और छिपा हुआ दोनों से।

ऑडियो लिंक: https://www.deensahih.com/series-selected-chapters-from-kitab-al-taw%e1%b8%a5id/